Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

स्थापत्य कला के क्षेत्र में विकसित नवीन तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का अध्ययन (1206 -1526)

साक्षी मिश्रा

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तरप्रदेश।

कला मानव जीवन की सभ्यताए संस्कृति और रीति . रिवाजों का दर्पण है। वास्तुकला मानव जीवन के रीति . रिवाज की कहानी है। यह उस समाज का वर्णन हैए जिसमें इसका निर्माण हुआ है। जिस प्रकार से कोई राष्ट्र अपनी भाषा का प्रयोग करके उस समय का इतिहास लिखता है ठीक उसी प्रकार से प्रत्येक इमारतें अपने निर्माण कर्ता के व्यक्तित्व तथा राष्ट्र की छाप को प्रकट करती है।[1]

भारत में वास्तुकला शैली का विकास प्राचीन काल से ही प्रारंभ हो गया थाए किंतु तुर्कों के आगमन के बाद से एक नवीन शैली का जन्म हुआ जिसे हिंद . इस्लामी शैली कहते है।[2] इस शैली की प्रमुख विशेषता के रूप में देखा जा सकता है कि दिल्ली सल्तनत के शासकों के द्वारा भारतीय वास्तु के तत्वों को शामिल करते हुए मेहराबों और गुम्बदों का प्रयोग भवन निर्माण की प्रकिया में बड़े पैमाने पर किया गया। भव्य प्रवेश द्वार और स्तम्भों से रहित एक विशाल कक्षनुमा आकृति प्राप्त करने हेतु यह विधियां इस्तेमाल की गयी। यह प्राचीन रोमन विधि थीए जिसे बाइजेंटाइन राज्य से अरबों ने प्राप्त किया था ।[3] मुस्लिम वास्तुशिल्पियों ने हिंदू मंदिर शैली के वक्र रेखीय एवं कंगनी ;कार्निसद्ध छोटे वर्गाकार स्तम्भों और उत्कीर्णित रूपरेखाओं जैसे कमल को अलंकरण के लिए ग्रहण किया था । हिंदू शैलियों और इस्लामी शैलियों में विभिन्नताएं भी देखने को मिलती है। भारतीय शैली में स्तम्भों व बल्लियों के साथ बड़े . बड़े भारी पत्थरों का प्रयोग भवन निर्माण में किया जाता था। जबकि इस्लामी शैली में मुख्यतः मेहराब [4]तथा छोटे . छोटे ईटों का प्रयोग किया जाता था । साथ ही इस्लामी शैली में इमारतों के निर्माण में चूना मिश्रित गारे का इस्तेमाल भी किया जाने लगा था।

---

[1] हिस्ट्री ऑफ मिडिवल इंडियाए डा॰ ईश्वरी प्रसाद ए पृ॰ 538.539 ।

[2] इन्फ्लुएन्स ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन कल्चरए डॉ॰ ताराचंद ए पृ॰ 243.244 ।

[3] मध्यकालीन भारत में प्रौद्योगिकीए इरफ़ान हबीबए पृ॰ 73 ।

[4] मध्यकालीन भारतए सल्तनत से मुगल काल तक ;दिल्ली सल्तनत 1206.1526द्धए सतीश चंद्रए पृ॰ 154 ।

तुर्कों के द्वारा विजय स्मारक अथवा धार्मिक परंपरा पर आधारित मकबरोंए विद्यालयों तथा महलों का निर्माण भी करवाया जाता थाए जो दुर्ग के रूप में होते थे क्योंकि इस्लाम में जीवित वस्तु के चित्रांकन की मनाई थी। इसलिए तुर्कों की इमारतों में ऐसे कोई चित्र नहीं दिखाई पड़ते हैं और न ही किसी प्रकार की मूर्तियां दिखाई पड़ती हैं ।

हिंदू.मुस्लिम स्थापत्य कला शैलियों में अनेक विभिन्नताएं होते हुए भी धीरे.धीरे सामंजस्य स्थापित होता गया । सर मार्शल ने सल्तनत युगीन स्थापत्य को इंडो.इस्लामिक कला कहा हैए क्योंकि यह हिंदू.मुस्लिम दोनों की आपसी समझ व आत्मसातीकरण की प्रक्रिया का परिणाम था। जॉन मार्शल ने लिखा है कि दोनों शैलियों में एक समानता यह थी दोनों में एक विस्तृत खुला आंगन होता थाए जिसमें चारों ओर खंभेदार कमरे होते थे। ऐसे मंदिरों को सरलता से मस्जिदों के रूप में बदला जा सकता था इसलिए मुस्लिम विजेताओं ने इसका प्रयोग ऐसे भवन निर्माण के रूप में किया जाता था।

भवन निर्माण में नवीन संरचनात्मक तकनीकी .

1. 13वीं सदी में उत्तर भारत में भवन निर्माण प्रक्रिया में गुणात्मक परिणाम को देखा जा सकता है। तुर्कों के आगमन के बाद भवन निर्माण प्रक्रिया में प्रयोग होने वाली सामग्रियों में परिवर्तन आ गया। तत्कालीन समय में गुम्बदोंए मेहराबों तथा मेहराबदार छतों के निर्माण की प्रक्रिया की तकनीकों में परिवर्तन हुआ। नगरीय क्रांति के फलस्वरूप नगरों की स्थापना में तीव्र वृद्धि हुई। इसका प्रमुख कारण चूना. गारा का सीमेंट के रूप में प्रयोग होना जिसके फलस्वरूप भवन जल्द ही निर्मित होने लगे थे। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेहराबों के निर्माण के लिए वक्राकार डॉट पत्थर के रूप में पत्थरों तथा ईंटो को लगाने की आवश्यकता पढ़ती थी। जिसे एक.दूसरे से जोड़ने के लिए अच्छे किस्म के सीमेंट की जरूरत को महसूस किया गया। चूना व जिप्सम द्वारा बने मसालों के प्रयोग से ही इस जटिल संरचना का निर्माण संभव हो सका। ये दोनों पदार्थ ही ईंटों को जोड़ने के लिए अलग.अलग तरीके से कार्य करते थे। चूने का मसाला धीरे.धीरे मजबूत होता था और रासायनिक प्रभाव के कारण ईंटों को मजबूती से जोड़ने का कार्य करता थाए जबकि जिप्सम तेजी से जम जाता था साथ ही अपने साथ ईंट या पत्थर को भी मजबूती से जोड़ देता था। भवनों को प्लास्टर करने के लिए प्रायः खड़िया ;जिप्समद्ध का प्रयोग होता था। चूने के प्लास्टर का प्रयोग पानी रिसने वाले स्थानों जैसे. छतों परए नील बनाने के लिए हौज़ व नालियों में किया जाता था।[5]

2. सल्तनत काल में भवन निर्माण की प्रक्रिया में मेहराब व गुंबद बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ 13वीं सदी में जिस मेहराबदार भवन निर्माण पद्धति को देखा गया वह केवल मसालों का मिश्रण ही नहीं बल्कि दो भिन्न बाइजेंटाइन व ससानिद पद्धतियों का मिश्रण था। प्राचीन काल में बाइजेंटाइन भवन निर्माण की प्रक्रिया में नुकीली चोटीदार मेहराब व गोल आकार वाली संरचना पर गुंबद निर्माण को प्राथमिकता देते थे । इसे ससानिद पद्धति की मेहराबी छत के साथ समन्वय किया गया। 13वीं सदी में प्रारंभिक समय में जब भारतीय शिल्पकारों को गोल व नुकीले मेहराब व गुम्बद बनाना पड़ा तो वह करबेलिंग पद्धति को लागू किएए जिससे वह भली भांति परिचित थे जैसा कि कुतुब मीनार के मीनार में देखा जा सकता है। इस नई तकनीक के फलस्वरुप प्राचीन समय में प्रचलित शैलियां. स्तंभ व धरनी और कारबेलिंग का स्थान वैज्ञानिक तरीके से बनी मेहराबी छतों ;आर्चद्ध और शिखरों का स्थान गुम्बदों ने ले लिया। विभिन्न प्रकार के भवन

[5] मध्यकालीन भारत में प्रौद्योगिकीए इरफ़ान हबीबए पृ 71.73 ।

निर्माण कार्य में मेहराबों का प्रयोग किया जाने लगा था। परंतु तुर्कों ने प्रमुखतः से नुकीले मेहराब को ग्रहण किया था। 14वीं शताब्दी में नुकीले आकर के मेहराबों का दूसरा रूप चार कोनों वाला मेहराब . तुगलक सुल्तानों द्वारा अपने भवनों में प्रयुक्त किया गया था। नुकीले मेहराब बनाने का सामान्य तरीका था केंद्र में कम वजन और इसके ऊपर एक इंटों की परत लगाना था। यह परतें दूसरी चपटी ईंटों के लिए आधार का कार्य करते थेए जिस पर मेहराब के विकरणी डॉट पत्थरों को गारे के द्वारा जमाया जाता था। ये ईटों की दोहरी परतें आवश्यकता पड़ने पर मेहराबों के लिए कवच के रूप में कार्य करते थे। लेकिन गुंबद के निर्माण के लिए एक विशेष तकनीक की आवश्यकता महसूस हुई समस्या यह थी की एक ऐसे उपर्युक्त तरीके की जो वर्गाकार और आयताकार दीवारों को गोलाकार गुम्बदों के रूप में परिवर्तित कर सके । इस समस्या का एक हल था कि एक छोर से दूसरे छोर तक वर्गाकार विन्यास को स्क्विन्च की मदद से बहुभुजीय योजना में बदल देना।[6]

3. सल्तनत काल भवनों में सजावट के तत्वों के रूप में सुलेखों ज्यामितीयों और फूलों पत्तियों या बेल बूतों के रूप में उत्तीर्ण किया जाता था । इस प्रकार पशु.पक्षियों के चित्र को हतोत्साहित किया गया । सल्तनत काल में भवनों में साज. सज्जा की कला में सुलेखन का एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। कुरान की आयतें भवनों पर उकेरी जाती थी इस लिपि को कुफ्री लिपि कहा जाता था इस कला को भवनों के दरवाजोंए छतोंए चौखटों आदि स्थानो पर उकेरा जाता था । तुर्क अपनी इमारतों को सजाने के लिए कमल का फूलए घंटीए स्वास्तिक का चिन्ह तथा कुरान की आयतों का इस्तेमाल करते थे। इसे अरबस्क विधि रहते थे । अरबस्क विधि को एक अनवरत तने के रूप में जाना जाता था जो बराबर विभाजित होते रहते हैं और जिससे अनेक दूसरे पत्ति वाले तने विकसित होते रहते थे जो पुनः विभाजित हो सकते हैं अथवा मुख्य तनों से दोबारा जुड़ जाते थे। यह नमूना पुनरावृति की त्रिआयामी प्रभाव के साथ एक सुंदर संतुलित नमूने को जन्म देती है।[7]

मामलूककालीन स्थापत्यकला .

आरंभिक काल में दिल्ली सल्तनत स्थापत्य कला के क्षेत्र में तुर्को द्वारा लाई गई डिजाइन व निर्मित भारतीय स्थापत्य की झलक दिखाई पड़ती है। दिल्ली की कुव्वत. उल. इस्लाम मस्जिद व अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा ऐसी इमारतों के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। इन इमारतों पर अरबस्क विधि में कुरान की आयतें तथा भव्य प्रवेश द्वार प्राप्त होते हैं । कुव्वत .उल .इस्लाम मस्जिद के स्तंभ प्राचीन हिंदू शैली पर ही बने हैं इनमें कहीं.कहीं पर मूर्तिकला के भी झलक प्राप्त होते हैं ।[8] अजमेर का अढ़ाई दिन का झोपड़ा जो पहले जैन मठ था जिसे हिंदू मंदिर में बदला गया था तुर्कों ने मस्जिद के रूप में उसका उपयोग किया। यह मस्जिद एक चौकोर प्रांगण वाली भवन के रूप में निर्मित किया गया है बाहर की ओर भव्य प्रवेश द्वार जो मेहराबों की सहायता से बनाए गए हैं बांसुरी के आकार की मीनारें जो अब नष्ट हो चुके हैं। भीतर की ओर विग्रहराज चतुर्थ द्वारा रचित हरिकेली अंकित है इस मस्जिद को लेकर विद्वानों में अनेक मतभेद भी हैं।

---

[6] साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन अर्ली मिडिवल इंडियाएएमण् एसण् खानए पृण् 726 ।

[7] हिस्ट्री ऑफ ईस्टर्न एंड इंडियन आर्किटेक्चरए जेम्स फर्गुसनए भाग.2 ए पृण् 17.24 ।

[8] आर्किटेक्चर इन मेडिवल इंडियाए मोनिका जुनेजाए पृण् 143 ।

सर जॉन मार्शल के मतानुसार यह अढ़ाई दिन में निर्मित हुआ था इसलिए अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहा जाता है[9]ए जबकि पर्सी ब्राउन खंडन करते हुए बताते हैं कि उस स्थान पर अढ़ाई दिन तक मेला चलता था इसलिए इसका नाम अढ़ाई दिन का झोपड़ा पड़ा है।[10]

तुर्को ने आरंभिक विजय स्मारक के रूप में कुतुब मीनार का निर्माण करवाया।[11] इस प्रकार के स्मारक मध्य एशिया में बड़े पैमाने पर करवाए जाते थे। यह मीनार आधारशिला से कुछ झुकाव लिए हुए हैं इसका निर्माण कार्य लाल व सफेद बलुआ पत्थरों से किया गया है। प्रत्येक मंजिल ऊपर की ओर छोटी होती जाती है। प्रारंभ में यह इमारत चार मंजिला का था फिरोज शाह के समय में बिजली गिरने से एक मंजिला नष्ट होने के कारण पुनर्निर्माण करवाया गया तथा साथ में ही एक और मंजिला का निर्माण किया गया जिससे यह पांच मंजिला का हो गया ।

पर्सी ब्राउन ने लिखा है कि किसी भी दृष्टिकोण से देखने पर प्रभावशाली तथा भव्यता पूर्ण इमारत है। इस इमारत में लाल पत्थरों के विभिन्न प्रकार के रंगोंए बांसुरीनुमा मंजिल की बदलती हुई जालियां तथा उस पर उल्लेखित आयतें और उत्कृष्ट पत्थरों की कटावए छज्जों के नीचे हिलते.डुलते छायाए अत्यंत ही मनमोहक व प्रभावशाली प्रतीत होते हैं ।

वास्तव में इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जनक कहा जाता है। उसने अपने पुत्र नसरुद्दीन महमूद के मकबरे को एक नीचे आकार वाली छत के रूप में निर्मित करवाया थाए जिसे सुल्तानगढ़ी या गुफा के सुल्तान का मकबरा कहते हैं ।[12] इसके स्तंभोंए शीर्षों पर हिंदू कला की झलक दिखाई पड़ती है। इससे बेहतर कार्य योजना इल्तुतमिश के मकबरे में है। इसमें स्क्विन्च शैली पर घुमावदार मेहराब का इस्तेमाल हुआ है संभवत यह कार्य योजना एक गुंबद निर्माण की थी जो पूर्ण ना हो सकी। मकबरे पर कुरान की आयतें जालीदार आकृति पर लिखी गई है जो प्राचीन समय पर हिंदू मंदिरों पर लिखी जाती थी।

आरंभिक तुर्की स्थापत्य कला के क्षेत्र में मेहराबों का सही रूप में इस्तेमाल सर्वप्रथम बलबन के मकबरे में हुआ था। दिल्ली के महरौली में स्थित बलबन का मकबरा जो पत्थरों की सहायता से बनाया गया था अब जीर्णावस्था में है। यह इस्लामी कला का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है इसके कक्ष वर्गाकार रूप में है साथ ही पूर्व और पश्चिम में छोटे छोटे. छोटे कमरे निर्मित किए गए हैं। इसके चारों ओर प्रवेशद्वार निर्मित किए गए हैं। इस मकबरें के मेहराब दीवारों को दोनों कोनों से एक के ऊपर दूसरा पत्थर रखकर और प्रत्येक को थोड़ा आगे निकालकर निर्मित किया गया है ।

अन्य इमारतों के रूप में अतरकिन का दरवाजा ए हौज.ए.शम्सी ए हौज .ए. ईदगाहए शम्सी ईदगाहए बदायूं की जामा मस्जिद ए रजिया का मकबरा तथा लाल महल इत्यादि को देखा जा सकता है ।

<u>खिलजीकालीन स्थापत्यकला .</u>

[9] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडियाए सर जॉन मार्शलए पृ॰ 581 ।

[10] इंडियन आर्किटेक्चरए पर्सी ब्राउनए पृ॰ 12 ।

[11] हिस्ट्री ऑफ ईस्टर्न एंड इंडियन आर्किटेक्चरए जेम्स फर्गुसनए भाग.2 ए पृ॰ 120 ।

[12] इंडियन आर्किटेक्चरए पर्सी ब्राउनए पृ॰ 13।

इंडो. इस्लामी स्थापत्य शैली कि सही मायने में शुरुआत अलाउद्दीन के समय से होती है उसने दिल्ली की कुव्वत. उत. इस्लाम प्रांगण में एक मदरसे का निर्माण करवाया जो बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि का प्रतीत है। खिलजी कालीन प्रमुख भवन विशेषताएं निम्नलिखित थी .

1. वैज्ञानिक तकनीकों से बनाई गई मेहराबों का प्रयोगए नुकीले आकार वाली घोड़े की नालनुमा आकृति ।[13]

2.बगली डॉट ; स्क्विन्च शैलीद्ध के अंतर्गत मेहराबों के साथ गुंबदों का उदय ।

3.नई भवन निर्माण सामग्री के रूप में लाल पत्थरों व सुसज्जित नक्काशी दार संगमरमर का प्रयोग ।

आरंभिक खिलजी कालीन स्थापत्यकला में भूरे मटमैले रंग के पत्थरों का इस्तेमाल किया जाता था। दिल्ली के निकट अलाउद्दीन ने सीरी नगर का निर्माण करवाया था।[14] इसमें एक दुर्ग का भी निर्माण हुआ था बरनी के अनुसार यह दुर्ग मंगोल आक्रमण से सुरक्षा की दृष्टि से बनवाया गया था। अब इसके अवशेष के रूप में यहां निर्मित सरोवर तथा उनकी सीढ़ियां मात्र प्राप्त होते हैंए जिसे हौज.ए. खास कहा जाता है । अमीर खुसरो यहां बनवाए गए गुंबद का उल्लेख करता है और कहता है कि यह गुंबद पानी की सतह पर बुलबुले की भांति थे ।

अलाउद्दीन के साम्राज्य की भव्यता व आर्थिक समृद्धि के दर्शन उसके द्वारा निर्मित अलाई दरवाजे में देखा जा सकता है इसे इस्लामी स्थापत्य का हीरा माना जाता है। इसके निर्माण में लाल बलुआ पत्थर तथा सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है।[15] इसकी बारीक जालियां कलात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि की मालूम पड़ती हैं। बहुत से विद्वान कंगूरेदार मेहराब तथा बारीक जालियों के कारण इसे इंडो.इस्लामिक स्थापत्य की शुरुआत मानते हैं। यह भवन चकोरनुमा है ए जिसमें एक ऊंची कुर्सी ;चबूतरा द्ध का इस्तेमाल हुआ है । इस भवन के ऊपर वैज्ञानिक विधि से बनाया गया पहला गुंबद है सर्वप्रथम इसी भवन में घोड़े की नाल की आकृति के मेहराब का प्रयोग हुआ है। इसकी विशेषता यह है कि यह पहला भवन भी है जिसे त्रिकोण डॉट पत्थरों के आधार पर निर्मित किया गया है । पर्सी ब्राउन के अनुसार यह अलाई दरवाजा इस्लामी स्थापत्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

खिलजी शासनकाल में पूर्णतया इस्लामी शैली पर बनी जमात खाना मस्जिद प्रमुख है जो लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है जिसमें तीन कक्ष हैं । प्रारंभ में इसे मस्जिद के रूप में नहीं बनाया गया था बीच में एक वर्गाकार कक्ष बना हुआ था । तुगलक काल में दो अन्य कक्ष निर्मित करके इसे मस्जिद का रूप दिया गया । प्रवेश द्वार डॉटदार मेहराब तथा अरबस्क विधि की सहायता से बनाए गए हैं ।[16] अलाउद्दीन के शासनकाल में अन्य इमारतों ए जैसे. चित्तौड़ विजय के बाद गम्बेरी नदी पर बना हुआ पुल जिसका डॉट शेष बचा हुआ है तथा भरतपुर में उरवा मस्जिद का निर्माण किया गया था ।

<u>तुगलककालीन स्थापत्यकला.</u>

[13] मध्यकालीन भारतीय कलाएं और उनका विकासए डॉ॰ रामनाथए पृ 38 ।

[14] मध्ययुग का इतिहासए डॉ॰ ईश्वरी प्रसादए पृण 518 ।

[15] हिंदू.मुस्लिम स्थापत्य कला शैलीए असगर अली कादिरीए पृण 219 ।

[16] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडियाए मार्शलए पृण 583 ।

तुगलककालीन स्थापत्य में खिलजी कालीन स्थापत्य के समान सुंदरता नहीं दिखाई पड़ती है बल्कि राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक संकट की झलक दिखाई पड़ती है इसी कारण तराशें पत्थरों के स्थान पर अनगढ़ पत्थरों का इस्तेमाल किया जाने लगा था ।

सर जॉन मार्शल का मानना है कि जब मोहम्मद तुगलक द्वारा राजधानी दौलताबाद स्थानांतरित की गई तो दिल्ली में कारीगरों की कमी हो गई परंतु इस बात पर सहमत होना कठिन है क्योंकि कारीगर बाहर से भी बुलाए जाते थे । इसके साथ ही तुगलक कालीन इमारतों की निम्न विशेषताओं को देखा जा सकता है .

1. इमारतों की नींव गहरी तथा दीवारें मोटी होती थी। साथ ही यह अंदर की ओर झुकी होती थी जिसे सलामी स्थापत्य कहा जाता था। अनगढ़ पत्थर और प्लास्टर की सहायता से इन दीवारों को बनाया जाता था। यह दीवारें कमजोर ए सादे स्तंभ तथा डॉटदार मेहराब से निर्मित होते थे ।

2. इस काल में इमारतों में मीनारों का निर्माण नहीं किया जाता था ।

3. चार कोने वाली नई मेहराब के सीमित व शायद प्रयोगात्मक प्रयोग ने इसके आधार पर धरनी की आवश्यकता को जन्म दिया जो तुगलक शैली की प्रमुख विशेषता है।

4. प्रचलित दबी हुई गर्दन वाले गुंबदओं की जगह नए स्पष्ट रूप से उभरी हुई गर्दन वाले गुंबदों का प्रयोग होने लगा था।

5.भवनों की पटिट्काओं को सजावट के लिए सफेद टाइल्स का प्रयोग भी होने लगा। इस काल में अष्टभुजी मकबरें का उदय हुआ जिसे 16वीं . 17वीं सदी के शासकों ने पूर्णता प्रदान किया ।

गयासुद्दीन के शासनकाल में दो प्रमुख रूप से निर्माण कार्य हुए एक तुगलकाबाद नगर तथा दूसरा उसका अपना मकबरा। तुगलकाबाद एक दुर्ग की भांति बनाया गया जिसमें भारी भरकम दीवारें तथा सुनहरे पत्थर इस्तेमाल किए गए।[17] इब्नबतूता कहता है कि यह पत्थर धूप में इतना चमकता था कि कोई भी व्यक्ति इसे टकटकी लगाकर नहीं देख सकता था। ग्यासुद्दीन के मकबरे को एक दुर्गनुमा संरचना जैसा बनाया गया है जिस के बीचों. बीच एक कृत्रिम झील का भी निर्माण किया गया था जो लाल बलुआ पत्थर तथा सफेद संगमरमर से निर्मित था। इस मकबरे की संरचना पंचभुजाकार तथा इसका गुंबद अष्टभुजीय ड्रम के आधार पर निर्मित किया गया था। सबसे ऊपर की ओर प्राचीन हिंदू मंदिरों की भांति आमलक व कलश का इस्तेमाल हुआ था जो तुगलक काल में सहिष्णुता वह सहअस्तित्व को दर्शाता है।

मोहम्मद बिन तुगलक का शासनकाल राजनीतिक अस्थिरता से भरा रहा उसने तुगलकाबाद नगर के समीप आदिलाबाद का दुर्ग निर्मित करवाया। सीरी के निकट जहांपनाह नगर भी बसाया[18] एकिंतु ये इमारतें अधूरी बनी रह गयी। नगर के अवशेषों में एक संरचना सात मेहराबों से युक्त दो मंजिला पुल था जिसे सतपुल कहते थे इसके भी अवशेष बचे है। इसके साथ ही छावनीए हजार सितून महलए जहांपनाह नगरए दौलताबाद नगर तथा विजय मंडल आदि का निर्माण कार्य भी शासनकाल में हुआ था।

---

[17] तुगलककालीन भारतएअनु॰ए अतहर अब्बास रिजवीए भाग.2ए पृष्ठ 24 ।

[18] इंडियन आर्किटेक्चरए पर्सी ब्राउनए पृष्ठ 22 ।

फ़िरोजशाह के शासनकाल में उसका धर्म भीरु व्यक्तित्व इमारतों में दिखाई पड़ता हैए जिसके अंतर्गत फ़िरोजशाह ने भूरे मटमैलें पत्थरों का इस्तेमाल भवन निर्माण में करवाया था। इमारतें पहले की भांति झुकाऊ लिए हुए सादे थे जो कमल के फूल व घंटे की सहायता से अलंकृत की गये थे जिसका उदाहरण फिरोज शाह का अपना मकबरा है। इस मकबरे की विशेषता यह है कि इस पर एक गुंबद बना है जो अष्टकोणीय ड्रम पर रखा हुआ है।

फरिश्ता कहता है कि फिरोजशाह महान कलाप्रेमी था। उसने अनेक नगरोंए किलोंए बागोंए नहरों तथा मस्जिदों का निर्माण करवाया था[19]। भवन निर्माण शैली में आड़े . तिरछे छज्जेए छतरियों और मंडपों का बाहुल्य देखा जा सकता है। फिरोज शाह ने फिरोजाबाद नामक नगर बसाया था [20]यहां पर जो भी भवनों व मस्जिदों का निर्माण करवाया किया गया था। उसकी दीवारें सादी थी ए छोटे गुंबद मेहराब व बुर्ज बनवाए गए थे। इसके समय तक पवेलियन वाली छतों का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो गया था। सर्वप्रथम इसका प्रयोग खाने. जहां.तेलंगानी के मकबरे में हुआ था। भारत में अष्टकोणीय आधार पर निर्मित यह पहला मकबरा था। फ़िरोजशाह के शासनकाल में काली मस्जिदए खिर्की मस्जिदए बेगमपुरी मस्जिद का भी निर्माण कार्य हुआ था।[21]

सैयद वंश व लोदी वंश के समय स्थापत्य कला .

तैमूर आक्रमण के फलस्वरुप दिल्ली सल्तनत की आर्थिक स्थिति को गहरा आघात लगा था। सैय्यद शासकों ने भवन निर्माण कार्य उचित प्रकार से नहीं कर सके। इसी कारण इस काल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में खास प्रगति नहीं हुई। सैयद शासकों द्वारा निर्मित इमारतों की नींव गहरी व पक्की बनवाई जाती थी जिस पर पूरी इमारत का निर्माण होता था। अष्टभुजाकार मकबरों में मुबारक शाह तथा मोहम्मद शाह सैयद प्रमुख थे । इनके मकबरें में एक विशाल गुंबद है तथा केंद्रीय गुंबद के चारों ओर छतरियों की योजना है।

आगे चलकर लोदियों के शासनकाल में स्थापित कला को एक नया रूप मिला जिसमें विभिन्न परिवर्तन को दिखा जा सकता है .

1. मकबरे को चबूतरे पर बनाया जाने लगाए जिससे गुंबद को ऊंचा दर्शाया जा सके और वह भव्य दिखाई पड़े।

2. मकबरा बाग के बीचों.बीच बनने लगा। मकबरे में जाली का संयोजक इस प्रकार किया जाने लगा कि सोए हुए व्यक्ति के दैवीय स्वरूप की ओर संकेत किया जा सके। सिकंदर लोदी के मकबरे में उपर्युक्त विशेषता विद्यमान है जिस पर दोहरे गुंबद का निर्माण करवाया गया था[22] तथा इसका आधार अष्टकोणीय था।

लोदी काल में बहुत सी मस्जिदों का भी निर्माण हुआ एजैसे. मोठ की मस्जिद[23] ए शीशा मस्जिदए बड़ी गुंबदए शाह गुंबदए पोली गुंबद इत्यादि । इन इमारतों में लोदी कालीन अन्य विशेषताओं के साथ रंगीन टाइल्स का भी प्रयोग होने लगा था। जॉन मार्शल ने स्थापत्य कला की दृष्टि से लोदी काल को सर्वश्रेष्ठ कृति बताया। इसके साथ ही तुर्क शासकों ने

---

[19] एडवांस स्टडी इन द हिस्ट्री ऑफ मिडिवल इंडियाए डॉ॰ जेण्एलण् मेहताए भाग.1 पृण् 290.291 ।

[20] तारीख़ ए फिरोजशाहीए अफीफए अनु॰ सैयद अब्बास रिज़वी भाग.2 पृण् 77 ।

[21] हिस्ट्री ऑफ सल्तनत आर्किटेक्चरए रामनाथए पृण् 52।

[22] मध्यकालीन भारतीय कलाएं और उनका विकासए डॉ॰ रामनाथए पृण् 41 ।

[23] वहीं एपृण् 41.41 ।

विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक भवनों तथा निर्माण कार्य किया । इन भवनों में सरायोंए तालाबोंए बांधोंए डाक चौकियों इत्यादि का भी निर्माण करवाया गया था।

इस प्रकार से दिल्ली सल्तनत काल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी परिवर्तनों को देखा जा सकता है। इन्हीं तकनीकों का प्रयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक स्थलोंए भवनोंए मस्जिदोंए मकबरों का निर्माण किया गया। इनके निर्माण कार्य में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का भी प्रयोग किया गया जिससे स्थापत्य कला के क्षेत्र में आए तकनीकी परिवर्तनों के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार से हमें न केवल अत्यधिक भवन निर्माण कार्य अपितु हिंदू . इस्लामी शैलियों का संयोजन भी देखने को मिलता है।

फर्ग्यूसन का कथन है कि सल्तनतकाल की भारतीय कला पर तुर्क कला का प्रभाव पड़ा है ए जबकि हैवेल इस बात से सहमत नहीं है उनका मानना है कि शरीर और आत्मा दोनों दृष्टि से इस काल की वास्तुकला शुद्ध रूप से भारतीय है किंतु धीरे.धीरे हिंदू प्रभाव घटता गया जिससे एक नई मिश्रित हिंदू.मुस्लिम स्थापत्य कला का जन्म हुआ था।[24]

[24] हिंदू.मुस्लिम स्थापत्य कला शैलीए असगर अली कादरीए पृण 209 ।